“सामाजिक समरसता और अंत्योदय”

on the occasion of celebrating the 135th Birth Anniversary of

Bharat Ratna Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar

ऊँच-नीच और पद-सोपान से परे, बिना किसी समिति या औपचारिक निर्देश के “जहाँ काम, वहाँ हम” की भावना के साथ संस्थान ने मनाया सामाजिक समरसता दिवस—परिसर स्वच्छता, राष्ट्रीय संगोष्ठी और एक पंक्ति में बैठकर सहभोज कर स्वयं अपनी थालियाँ साफ़ कर दिया समानता का संदेश।

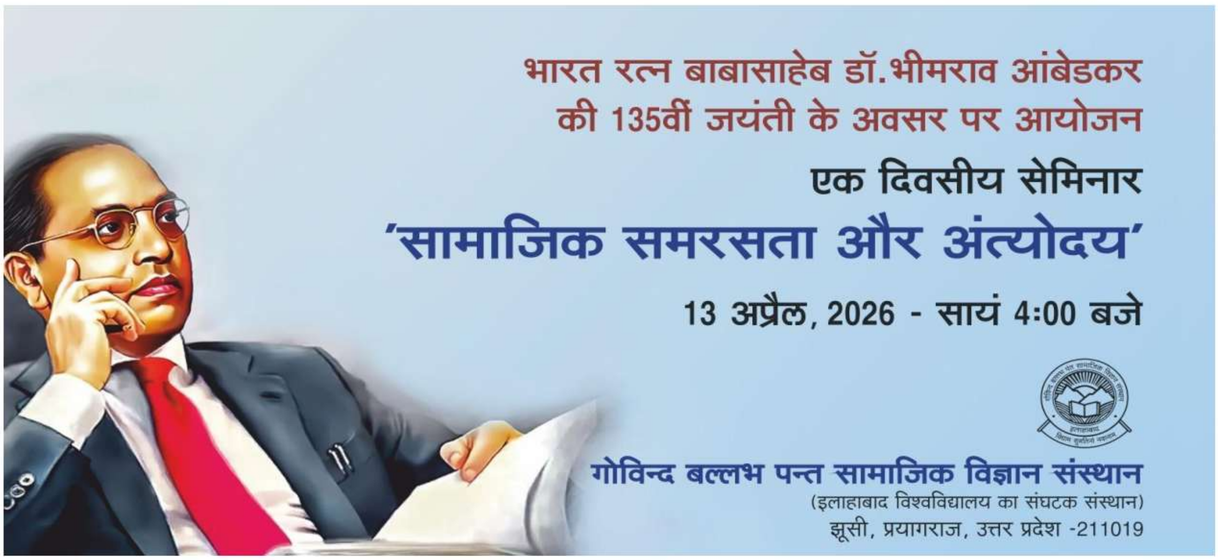

Govind Ballabh Pant Social Science Institute, Prayagraj

13th April 2026

Speakers:

1. **Chief Guest:** Hon’ble Justice Satya Veer Singh, Allahabad High Court, Prayagraj
2. **Presided by:** Hon’ble Justice Surya Prakash Kesarwani (former Senior Judge), Allahabad High Court, Prayagraj
3. **Special Guest:** Shri K. P. Singh, IG (Retd.), Prayagraj
4. **Special Guest:** Prof. Ram Chandra, Centre of Indian Languages (CIL), SLL & CS, JNU, New Delhi
5. Prof. Yogendra Pratap Singh, Director, GBPSSI, Prayagraj

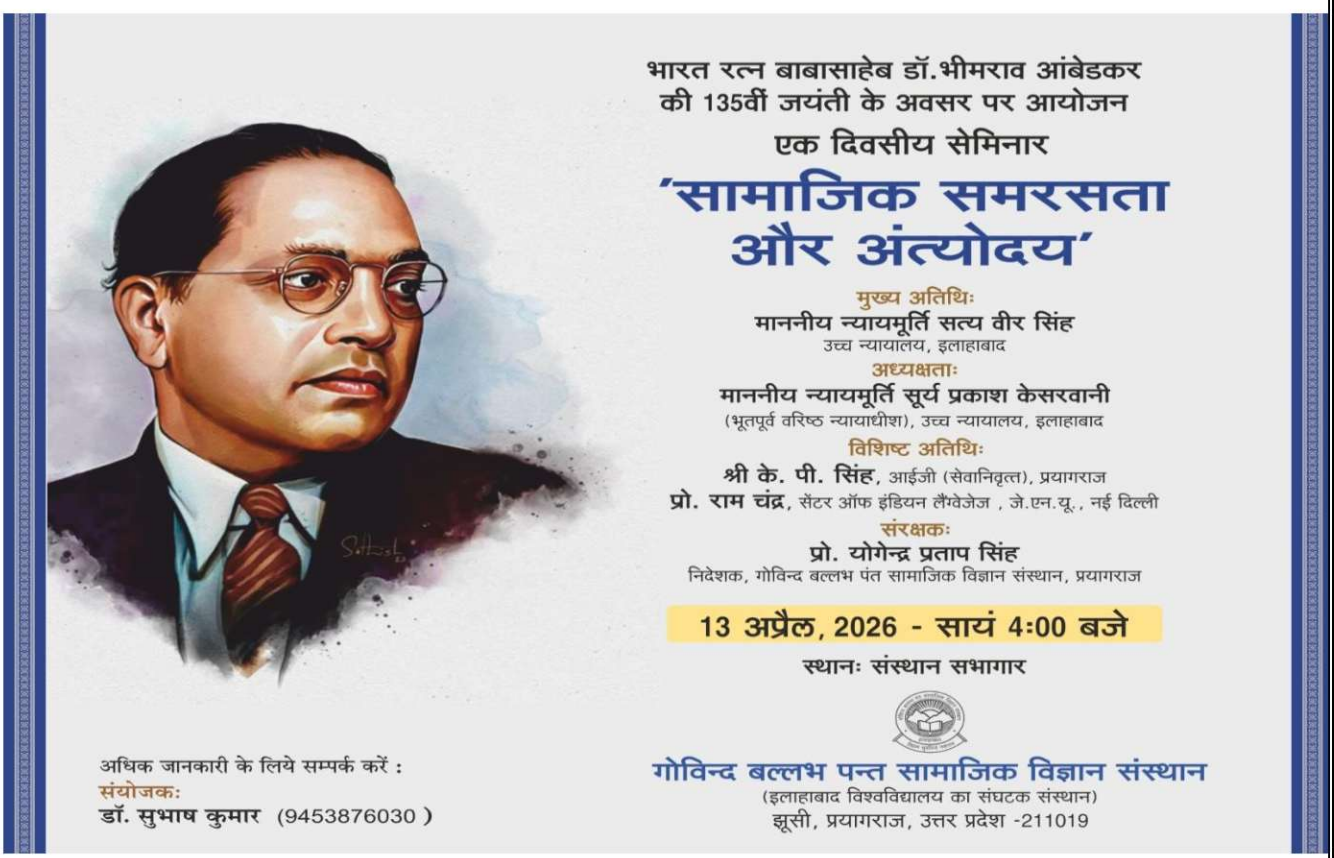

स्वागत भाषण: प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक,

गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज

प्रो. सिंह ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सामाजिक वैज्ञानिकों का दायित्व केवल अध्ययन और विश्लेषण तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें समाज के प्रति उत्तरदायी भूमिका निभानी चाहिए। जैसे प्राकृतिक विज्ञान अपने क्षेत्र में अत्यंत प्रभावी ढंग से कार्य कर रहे हैं, उसी प्रकार सामाजिक वैज्ञानिकों को भी समाज की समस्याओं पर गंभीरता से विचार करते हुए उसके समग्र उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए।

कबीर, रैदास जैसे संतों और अनेक सामाजिक सुधारकों ने अपने विचारों और कार्यों से समाज को सही दिशा प्रदान की। उन्होंने समानता, भाईचारे और मानवता का संदेश दिया, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। हमारे समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और ऊँच-नीच की प्रवृत्ति, जिसकी ओर डॉ. बाबा साहेब भीम राव आंबेडकर ने अपने लेखन में स्पष्ट रूप से संकेत किया है, आज भी एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। उन्होंने कहा था कि एक जाति दूसरी जाति पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास करती है—यह प्रवृत्ति सामाजिक समरसता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

ऐसे में इस संस्थान की भी समान जिम्मेदारी है कि वह सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा दे। इसी उद्देश्य से आज प्रातः 8:00 बजे से 11:00 बजे तक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया, जिसमें

शिक्षकों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों, शोधार्थियों तथा एमबीए के विद्यार्थियों सहित सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर परिसर की स्वच्छता में योगदान दिया।

हम सभी का यह दायित्व है कि हम न केवल अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें, बल्कि समाज में समरसता, समानता और सद्भाव को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। यही सच्चे अर्थों में एक विकसित और सशक्त समाज की पहचान होगी। प्रो. सिंह ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों एवं अध्यक्ष महोदय का हार्दिक स्वागत किया। साथ ही उन्होंने **University of Allahabad** से पधारे सभी अतिथियों तथा बोर्ड के सदस्यों का भी सादर अभिनंदन किया।

कार्यक्रम संचालक: डॉ. सुभाष कुमार, सहायक प्रोफेसर, जी.बी.पी.एस.एस.आई.

Dr. Subhash Kumar formally introduced the Chief Guest and other distinguished dignitaries, presented their brief profiles, and invited the speakers to deliver their addresses.

1. प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह, निदेशक गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञानं संस्थान, प्रयागराज

- प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं विद्वान हैं, जो वर्तमान में गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। इसके साथ ही इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर के रूप में भी संबद्ध रहे हैं। आप वर्ष 2018 से प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं तथा इससे पूर्व 2002 से 2018 तक डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, कानपुर में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं।
- उन्होंने हिंदी विषय में एम.ए. एवं पीएच.डी. की उपाधि इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की है तथा पीजी डिप्लोमा एवं एम.जे. जैसी उपाधियाँ भी अर्जित की हैं। आपके अध्ययन एवं शोध के प्रमुख क्षेत्र हिंदी साहित्य का इतिहास, भाषा विज्ञान, प्रयोजनमूलक हिंदी तथा भाषा प्रौद्योगिकी हैं।
- उन्होंने हिंदी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए 13 पुस्तकों, 16 शोध-पत्रों, 4 सम्मेलन कार्यवाहियों तथा 2 शोध परियोजनाओं पर कार्य किया है। आपने अनेक शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया है तथा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सक्रिय सहभागिता निभाई है।
- उनको अपने उत्कृष्ट शैक्षणिक योगदान के लिए मदन मोहन मालवीय सम्मान, भाषा मित्र सम्मान, आचार्य क्षेमेन्द्र मनीषी सम्मान, महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया है।
- प्रो. सिंह विभिन्न शैक्षणिक एवं पेशेवर संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं, जिनमें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, भारतीय हिंदी परिषद, इंडियन साइंस कांग्रेस आदि प्रमुख हैं।
- अपने व्यापक अनुभव, शोध योगदान एवं हिंदी भाषा के संवर्धन के प्रति समर्पण के कारण प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह अकादमिक जगत में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं।

2. मुख्य अतिथि: माननीय न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह, इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज

माननीय न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह

- **माननीय न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह का जन्म जनपद अलीगढ़ की तहसील अतरौली के ग्राम नहाल में हुआ। आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय संस्थानों से प्राप्त की तथा डी.एस. कॉलेज, अलीगढ़ (डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से संबद्ध) से विधि में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके अतिरिक्त आपने अंग्रेज़ी (अमेरिकन साहित्य) में परास्नातक उपाधि भी प्राप्त की है। छात्र जीवन में आप एक सक्रिय एनसीसी कैडेट रहे और वर्ष 1995 में 'सर्वश्रेष्ठ कैडेट' के रूप में सम्मानित हुए।**
- **उन्होंने वर्ष 2004 में अधिवक्ता के रूप में नामांकित हुए और प्रतिष्ठित वरिष्ठ अधिवक्ताओं के मार्गदर्शन में अपने विधिक करियर की शुरुआत की। आपने मुख्यतः आपराधिक मामलों के साथ-साथ दीवानी (सेवा) एवं संवैधानिक विषयों पर भी प्रभावी वकालत की। आप श्रीकृष्ण जन्मभूमि प्रकरण जैसे महत्वपूर्ण मामलों से भी जुड़े रहे हैं।**
- **न्यायमूर्ति सिंह ने समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए किसानों, महिलाओं, छात्रों एवं अन्य वंचित वर्गों को नि:शुल्क विधिक सहायता प्रदान की तथा विधिक जागरूकता कार्यक्रमों का सक्रिय रूप से संचालन किया। इसके अतिरिक्त, आपने उत्तर प्रदेश के विभिन्न महत्वपूर्ण संस्थानों के लिए स्थायी अधिवक्ता (Standing Counsel) के रूप में भी सेवाएँ दी हैं।**
- **उनकी उत्कृष्ट विधिक क्षमता एवं समर्पित सेवा के परिणामस्वरूप 27 सितम्बर 2025 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया।**

माननीय न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा समाज की एक बड़ी विडंबना यह है कि कई बार समुदाय अपने ही हितों और एकता को समझ नहीं पाता, जिससे वह विभाजित हो जाता है। बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर के प्रत्येक प्रयास राष्ट्र-निर्माण की दिशा में केंद्रित थे। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के प्रश्न पर सिद्धांतों से समझौता न करते हुए मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया, क्योंकि *हिंदू कोड बिल* को पर्याप्त समर्थन नहीं मिल रहा था।

डॉ. आंबेडकर का यह प्रसिद्ध कथन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है कि *"किसी समाज की प्रगति का आकलन उस समाज में महिलाओं की प्रगति से किया जाना चाहिए।"* प्रारंभ में इस विधेयक का व्यापक विरोध हुआ, विशेषकर महिलाओं के अधिकारों को लेकर अनेक भ्रांतियाँ फैलाई गईं, किंतु आज उसी के परिणामस्वरूप महिलाओं को समानता और अधिकार प्राप्त हो सके हैं।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि हमारी पहचान जाति से नहीं, बल्कि राष्ट्र से होनी चाहिए—हम सभी सबसे पहले और अंततः भारतीय हैं।

शोध (Research) के संदर्भ में यह समझना आवश्यक है कि शोध केवल पूर्व में किए गए कार्यों को दोहराना नहीं है, बल्कि वास्तविक समस्याओं की पहचान कर उनके समाधान की दिशा में कार्य करना है। हमें गांवों में जाकर किसानों और वंचित वर्गों की समस्याओं को समझना होगा और उन्हें अपने अध्ययन एवं नीतिगत विमर्श का हिस्सा बनाना होगा।

माननीय न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति का मापदंड यह है कि समाज के सबसे गरीब और वंचित व्यक्ति को कितना सम्मान, सुरक्षा और अपनापन महसूस होता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अधिकार तभी सार्थक होते हैं, जब लोगों को उनके अधिकारों की जानकारी हो और वे उन्हें प्राप्त करने के प्रति जागरूक हों।

उन्होंने अपने जीवन के अनुभव साझा करते हुए बताया कि ईमानदारी और कठोर परिश्रम ही सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है। कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने शिक्षा को अपना साधन बनाया और अपने शिक्षकों के सहयोग से आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त किया।

उन्होंने यह भी कहा कि हमें प्रतिशोध की भावना से नहीं, बल्कि सकारात्मक परिवर्तन की भावना से कार्य करना चाहिए। जीवन में हमें केवल यह नहीं सीखना चाहिए कि क्या कहना है, बल्कि यह भी सीखना चाहिए कि क्या नहीं कहना है—यही सच्चे अर्थों में जीवनभर सीखने की प्रक्रिया है।

अंत में उन्होंने सभी से आह्वान किया कि हम गरीबों, किसानों, सुरक्षा कर्मियों और वंचित समुदायों के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता रखें, ताकि समाज के सभी वर्ग समान रूप से प्रगति कर सकें। यही सच्चे अर्थों में सामाजिक समरसता और समावेशी विकास की दिशा में हमारा योगदान होगा।

3. विशिष्ट अतिथि: प्रो. राम चंद्र, भारतीय भाषा केंद्र, जेएनयू, नई दिल्ली

प्रो. राम चंद्र

- प्रो. राम चन्द्र एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार हैं, जो वर्तमान में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली के भारतीय भाषा केंद्र में हिन्दी के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। आप वर्ष 2006 से जेएनयू में संकाय सदस्य के रूप में निरंतर योगदान दे रहे हैं। आपने हिन्दी विषय में एम.ए., एम.फिल. एवं पीएच.डी. की उपाधियाँ जेएनयू से ही प्राप्त की हैं।
- उनके अध्ययन एवं शोध के प्रमुख क्षेत्र हिन्दी कथा साहित्य, दलित साहित्यिक सिद्धांत एवं आलोचना तथा प्रेमचंद का दलित दृष्टिकोण हैं। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में आपने "दलित साहित्य: आशय, आंदोलन और अवधारणा" तथा "दलित साहित्य की विकास-यात्रा" जैसी महत्वपूर्ण कृतियों सहित 8 पुस्तकों, 50 से अधिक शोध-पत्रों एवं अनेक लेखों के माध्यम से उल्लेखनीय योगदान दिया है।
- प्रो. राम चन्द्र ने अनेक प्रतिष्ठित शैक्षणिक निकायों से जुड़े रहे हैं, जिनमें सीआईआईएल, मैसूर का भारतवाणी प्रोजेक्ट, एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों—जैसे बीबीएयू लखनऊ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, हैदराबाद विश्वविद्यालय, लद्दाख विश्वविद्यालय आदि—में बोर्ड ऑफ स्टडीज एवं अन्य महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं।

प्रोफेसर राम चंद्र, भारतीय भाषा केंद्र, जेएनयू, नई दिल्ली ने अपने संबोधन की शुरुआत मंच पर विराजमान सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए की। उन्होंने भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीम राव आंबेडकर तथा गौतम बुद्धा को नमन करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए।

उन्होंने कहा कि "Pay Back to Society" का विचार किसी एक समुदाय के लिए नहीं, बल्कि समस्त समाज के लिए है। गौतम बुद्ध ने बहुत पहले ही हमें समरसता, सह-अस्तित्व और सामूहिक प्रगति का मार्ग दिखाया था। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को समाज के साथ मिलकर चलने और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

अपने अनुभव साझा करते हुए प्रोफेसर राम चंद्र ने बताया कि गाज़ियाबाद में "चिराग तले अंधेरा" कार्यक्रम के अंतर्गत मानवाधिकारों के लिए कार्य करते समय उन्होंने यह महसूस किया कि समाज में अभी भी जागरूकता की कमी है। उन्होंने कहा कि हमारे संविधान में मौलिक अधिकारों तथा राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक समरसता को सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है।

डॉ. आंबेडकर ने गहन अध्ययन और विश्लेषण के आधार पर समाज में विद्यमान असमानताओं को दूर करने के लिए आरक्षण जैसी व्यवस्थाओं को संविधान में स्थान दिलाया, जिससे वंचित वर्गों को न्याय मिल सके।

उन्होंने आगे कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र बनने के लिए वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ना होगा। चीन, रूस, अमेरिका और जापान जैसे देशों ने जिस ऊंचाई को प्राप्त किया है, हमें भी उसी दिशा में प्रयास करना होगा, तभी हम स्वयं को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित कर पाएंगे।

अंत में उन्होंने कहा कि बाबा साहेब का आंदोलन किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें सभी समुदायों के लोग शामिल थे। उनके विचारों और आंदोलनों ने समाज को नई दिशा दी और राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर किया। वास्तव में, बाबा साहेब सभी समुदायों के सच्चे नेता थे।

4. विशिष्ट अतिथि: श्री के. पी. सिंह, आईजी (सेवानिवृत्त), प्रयागराज

Shri K. P. Singh (IG, Retd.) उत्तर प्रदेश पुलिस के एक प्रतिष्ठित एवं अनुभवी अधिकारी रहे हैं, आपने लगभग 35 वर्षों तक राज्य पुलिस सेवा एवं भारतीय पुलिस सेवा (IPS) में उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान कीं। अपने दीर्घ सेवा काल में आपने बस्ती, प्रयागराज, देवरिया, बहराइच, सीतापुर, फतेहपुर सहित अनेक जनपदों तथा जीआरपी, पुलिस मुख्यालय, इंटेलिजेंस एवं एसटीएफ जैसी महत्वपूर्ण इकाइयों में विभिन्न उच्च पदों—जैसे पुलिस अधीक्षक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, उप महानिरीक्षक एवं महानिरीक्षक—पर कार्य किया।

- उन्होंने विशेष रूप से कानून-व्यवस्था बनाए रखने, गंभीर अपराधों की जांच, तथा भ्रष्टाचार एवं जालसाजी से जुड़े मामलों में उल्लेखनीय योगदान दिया।
- उनको भारत सरकार की ओर से तीन संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों—कोसोवो (2002-03, 2008-09) एवं ईस्ट तिमोर (2011-12)—में UN CIVPOL अधिकारी के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहाँ आपने मानवाधिकार संरक्षण एवं अपराध जांच में सक्रिय योगदान दिया।
- कुंभ मेला 2013 (एसपी ट्रैफिक) तथा विश्व के सबसे बड़े धार्मिक समागम कुंभ मेला 2019 (DIG/SSP) के सफल संचालन में आपकी भूमिका अत्यंत सराहनीय रही। इसके अतिरिक्त, अयोध्या रेंज के पुलिस महानिरीक्षक के रूप में आपने दीपोत्सव, रामनवमी एवं अन्य बड़े आयोजनों के दौरान कानून-व्यवस्था का सफल प्रबंधन किया।
- उनको उत्कृष्ट योगदान के लिए आपको संयुक्त राष्ट्र शांति पदक, राष्ट्रपति पुलिस पदक (2020), पुलिस मेडल (2010), मुख्यमंत्री उत्कृष्ट सेवा पदक, तथा प्रधानमंत्री द्वारा कुंभ मेला 2019 के लिए सम्मानित किया गया।
- वर्तमान में आप काशी प्रांत, उत्तर प्रदेश में विश्व हिन्दू परिषद (VHP) के प्रमुख के रूप में समाज सेवा एवं सांस्कृतिक नेतृत्व में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

श्री के. पी. सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि उन्होंने पिछले 35 वर्षों तक सेवा की है और इस दौरान उन्होंने भारत को बहुत करीब से देखा है। भारत प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध देश है, लेकिन इसके बावजूद हम कई क्षेत्रों में अभी भी पीछे हैं, इसलिए हमें निरंतर

प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों ने पूरे समाज की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने का प्रयास किया, लेकिन यह दृष्टिकोण समाज के संतुलित विकास के लिए उचित नहीं है और इससे समाज को काफी नुकसान भी हुआ है।

उन्होंने भारतीय संविधान की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीम राव आंबेडकर के नेतृत्व में संविधान निर्माताओं ने विश्व के विभिन्न संविधानों से श्रेष्ठ तत्वों को अपनाकर हमारे संविधान को समृद्ध बनाया। साथ ही, हमारी अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं को भी इसमें उचित स्थान दिया गया। इसी कारण भारतीय संविधान विश्व के सबसे उत्कृष्ट संविधानों में से एक माना जाता है।

उन्होंने कहा कि यदि हम केवल पुरानी रूढ़ियों और परंपराओं से ही चिपके रहते, तो शायद हम आज इतनी प्रगति नहीं कर पाते। अपने विदेश अनुभव का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि अमेरिका में भी भारत की आरक्षण नीति की सराहना की जाती है। वहाँ भारतीय संविधान को एक आदर्श संविधान माना जाता है, जो सकारात्मक हस्तक्षेप के माध्यम से वंचित वर्गों, महिलाओं और गरीबों के उत्थान की क्षमता रखता है।

अंत में श्री के. पी. सिंह ने कहा कि हमें अपने कार्यों का मूल्यांकन परिणाम के आधार पर करना चाहिए। जब हम अपने कार्यों के प्रति जिम्मेदार और परिणामोन्मुखी दृष्टिकोण अपनाएंगे, तभी भारत एक सशक्त और विकसित राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ सकेगा।

5. अध्यक्षता: माननीय न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी (पूर्व वरिष्ठ न्यायाधीश), इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज

माननीय न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी (पूर्व वरिष्ठ न्यायाधीश)

- माननीय न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी एक प्रतिष्ठित एवं अनुभवी वरिष्ठ न्यायाधीश हैं, जिनका जन्म वर्ष 1962 में हुआ। उनको वर्ष 1985 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा अगस्त 1985 में अधिवक्ता के रूप में नामांकन कराया।
- उनका विधिक करियर अत्यंत दीर्घ एवं गौरवपूर्ण रहा है, जिसमें आपने मुख्यतः कराधान (Taxation) एवं संवैधानिक विषयों पर प्रभावी रूप से वकालत की। अपनी गहन विधिक समझ एवं न्याय के प्रति समर्पण के कारण उनको 12 अप्रैल 2013 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया तथा 2 अगस्त 2014 को उनको स्थायी न्यायाधीश के रूप में शपथ ग्रहण किया।
- उनको 1 नवम्बर 2023 तक इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अत्यंत गरिमापूर्ण सेवाएँ प्रदान कीं, तत्पश्चात 2 नवम्बर 2023 को उनका स्थानांतरण कलकत्ता उच्च न्यायालय में किया गया।
- उनके व्यापक अनुभव, न्यायिक प्रखरता एवं विधि के शासन के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के कारण न्यायमूर्ति केसरवानी भारतीय न्यायपालिका में एक अत्यंत सम्मानित व्यक्तित्व हैं। उनका समर्पण, विद्वता एवं सिद्धांतनिष्ठ आचरण आज भी विधिक समुदाय के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

माननीय न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में मुख्य वक्ताओं के विचारों की सराहना करते हुए कहा कि माननीय न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह का भाषण अत्यंत प्रेरणादायक और उत्साहवर्धक रहा। उन्होंने कहा कि उनका जीवन प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक सीख है, जिन्होंने संघर्ष के माध्यम से सफलता प्राप्त की है।

उन्होंने प्रोफेसर राम चंद्र के विचारपूर्ण एवं प्रभावशाली वक्तव्य की प्रशंसा की तथा बाबा साहेब भीम राव आंबेडकर के प्रति उनके सम्मान को सराहा। साथ ही, उन्होंने श्री के. पी. सिंह के दीर्घ सेवा-काल, उनके अनुभवों तथा संयुक्त राष्ट्र से जुड़े उनके कार्यों की भी प्रशंसा की।

माननीय अध्यक्ष महोदय ने संस्थान के निदेशक प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने "सामाजिक समरसता और अंत्योदय" जैसे महत्वपूर्ण विषय पर डॉ. आंबेडकर की जयंती के अवसर पर एक उत्कृष्ट कार्यक्रम का आयोजन किया है।

अपने संबोधन में उन्होंने समानता के सिद्धांत पर विशेष बल दिया और भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 17, 19 और 25 का उल्लेख करते हुए कहा कि ये सभी अनुच्छेद सामाजिक समरसता और समानता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने अपने वक्तव्य में राष्ट्रकवि राम धरी सिंह दिनकर की कविता का उल्लेख करते हुए कहा कि महानता केवल जन्म से नहीं, बल्कि कर्म और त्याग से प्राप्त होती है। साथ ही, उन्होंने वेदों, पुराणों और उपनिषदों के संदर्भों के माध्यम से समाज में समानता और समरसता के महत्व को रेखांकित किया।

भारत रत्न बाबासाहेब डॉ.भीमराव आंबेडकर
की 135वीं जयंती के अवसर पर आयोजन
एक दिवसीय सेमिनार
'सामाजिक समरसता और अंत्योदय'
13 अप्रैल, 2026 - सायं 4:00 बजे

भारत रत्न
डॉ.भीमराव आंबेडकर
पर

भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर
की 135वीं जयंती के अवसर पर आयोजन
एक दिवसीय सेमिनार
'सामाजिक समरसता और अंत्योदय'
13 अप्रैल, 2026 - सायं 4:00 बजे

00 बजे
संस्थान
घटक संस्थान)

'साम

एक दिवसीय
डॉ. भीमराव आंबेडकर
अवसर पर आयोजन
4:00 बजे

6. धन्यवाद ज्ञापन

डॉ. अर्चना सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सभी माननीय अतिथियों एवं वक्ताओं के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति सत्य वीर सिंह, अध्यक्षता कर रहे माननीय न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी (भूतपूर्व वरिष्ठ न्यायाधीश), विशिष्ट अतिथि श्री के. पी. सिंह (आईजी, सेवानिवृत्त), प्रो. राम चंद्र (सेंटर ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज, जेएनयू, नई दिल्ली) तथा प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान,

प्रयागराज का विशेष रूप से आभार प्रकट किया। उन्होंने सभी अतिथियों के अमूल्य विचारों, मार्गदर्शन एवं गरिमामयी उपस्थिति के लिए धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम की सफलता में उनके महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की।

7. संकल्प

सभी सहभागियों ने सामूहिक रूप से संकल्प लिया कि:

"आज के पुण्य अवसर पर हम सब यह संकल्प करते है की बाबा साहेब के सपनो का भारत निर्मित करने हेतु अपने प्रत्येक दायित्व में यह ध्यान रखेंगे की समाज की मुख्या धरा से पिछड़ गये अंतिम व्यक्ति को उत्थान हो और जाति-भेद से ऊपर उठ कर मीडिया आदि के किसी बहकावे में आये बिना पारिवारिक भाव से देश- समाज- संस्थान के प्रत्येक सदस्य से समरस होकर बिना किसी प्रतिशोध के कन्धा से कन्धा मिलकर साथ चलेंगे".

एक दिवसीय सेमिनार
भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर
की 135वीं जयंती के अवसर पर आयोजन
'सामाजिक समरसता
और अंत्योदय'
13 अप्रैल, 2026 - सायं 4:00 बजे
गोविन्द बल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान

8. वंदे मातरम्!

डॉ. सुजीत कुमार सिंह ने "वंदे मातरम्" का भावपूर्ण गायन किया, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए उनका साथ दिया।

एक दिवसीय सेमिनार
'सामाजिक समरसता और अंत्योदय'
13 अप्रैल, 2026 - सायं 4:00 बजे

'सामाजिक समरसता
और अन्त्योदय'

'सामाजिक समरसता
और अंत्योदय'